॥ आरती श्री कुंज बिहारी की ॥
Aart Shri Kunj Bihari Ki

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।

श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली ;भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चंद्र सी झलक ;ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की…

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै ;बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिन संग ;अतुल रति गोप कुमारी की ॥
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की…

जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा ;बसी सिव सीस, जटा के बीच,
हरै अघ कीच ;चरन छवि श्रीबनवारी की ॥
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की…

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू ;हंसत मृदु मंद,चांदनी चंद,
कटत भव फंद ;टेर सुन दीन भिखारी की ॥
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की

॥ इति आरती श्री कुंज बिहारी सम्पूर्णम ॥